धीरेन्द्र नाथ मजूमदार (डी.एन.मजूमदार)

डॉक्टर डी. एन. मजूमदार ने जनजाति को एक ऐसा सामाजिक समूह माना है जिसका एक भौगोलिक क्षेत्र होता है, जो अंतर्विवाही है, जिसमें कार्यों का विशेषीकरण नहीं होता, जो जनजाति अधिकारियों द्वारा शासित होता है, जिसकी एक भाषा या बोली होती है, जो अन्य जनजातीय या जातियों से सामाजिक दूरी स्वीकार करता है, जो अपने जनजातीय परंपराओं विश्वासों और प्रथाओं को मानता है और जो जाति और क्षेत्रीय एकीकरण की एकरूपता के प्रति जागरूक होता है, उसे जनजाति कहते हैं।

डॉ मजूमदार के अनुसार एक जनजाति परिवारों या परिवारों के समूहों का संकलन होती है, जिसका एक सामान्य नाम होता है जिसके सदस्य एक निश्चित भूभाग पर निवास करते हैं, एक सी भाषा बोलते हैं और विवाह व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं तथा परस्पर एक निश्चित एवं मूल्यांकितआदान-प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं।

नातेदारी संबंध सामान्य भौगोलिक क्षेत्र एक राजनीतिक संगठन एक भाषा और परस्पर संघार, संघर्षों की अनुपस्थिति एक जनजाति की मुख्य विशेषताएं मानी जाती हैं।

डॉ मजूमदार के अनुसार - जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के लिए संस्कृत शब्द की सहायता ली है। संस्कृत भाषा में जाति व्यवस्था के लिए आरंभ में वर्ण शब्द का प्रयोग किया जाता था, जिसका अर्थ रंग तथा वर्ग दोनों होते हैं। प्रारंभ में तीन ऊंचे वर्ण रंग के आधार पर एक दूसरे से भिन्न थे,ये इंडो आर्यन प्रजाति और भारत के मूल निवासी प्राग द्रविड़ या भूमध्यसागरीय प्रजातियों के मिश्रण से बने थे। इस प्रजाति मिश्रण के अनेक कारण थे - आक्रमणकारी समूह में स्त्रियों की कमी, भारत के मूल निवासियों के स्थाई जीवन का आकर्षण, अति विकसित द्रविड़ संस्कृति की मातृ सत्तात्मक व्यवस्था, देवियों की पूजा संस्कार, पुरोहित व्यवस्था, शिक्षा आदि। भारत में संस्कृति के संघर्ष तथा प्रजातियों के संपर्क से विभिन्न समूह बने। इन सामाजिक समूहों - ब्राह्मण, क्षत्रियों और वैश्यों ने प्रारंभिक मिश्रण के पश्चात प्रजातीय विशुद्धता सांस्कृतिक एकता और अपनी उच्च स्थिति के स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण पेशे अपनाए। अन्य व्यक्तियों को उन पेशों को अपनाने की आज्ञा नहीं दी तथा अंतर्विवाह के नियम प्रचलित किया । इस वर्ण व्यवस्था को समाज पर आरोपित करने हेतु ब्राह्मणों की सहायता ली गई। भारत के मूल जनजातीयों ने भी अपनी विशेषता को बनाए रखने के लिए प्रयत्न किया, लेकिन अन्य समूहों से उनका अधिक संपर्क न होने से उन्हें निम्नतम सामाजिक स्थिति प्राप्त हुई। इस प्रकार जाति व्यवस्था की प्रजातीय आधार पर उत्पत्ति हुई।

डॉ मजूमदार के अनुसार - एक जाति परिवारों का एक संकलन है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जो सामान्य भूभाग पर निवास करती है, या अधिकार बताती है, प्रायः जिसकी एक सामान्य बोली होती है और जो सदैव अंतर्विवाही होती है। जब एक ही जाति विस्तृत रूप से दो पृथक क्षेत्र में निवास करती है, अलग-अलग बोली बोलती है तो उनके बीच कोई सामाजिक या वैवाहिक संबंध नहीं होते हैं। ऐसी दशा में फ्री एक ही सामान्य नाम होता है भी उन्हें विभिन्न जातियों के रूप में लेना होगा निम्न जातियों में अंतर विवाह के नियम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता और ऐसी जनजातीय भी हैं जो अंतर्विवाह के नियम का कठोरता से पालन करती हैं। ऐसी दशा में जाति और जनजाति के बीच अंतर करना बड़ा कठिन है जहां एक राजनीतिक संगठन का प्रश्न है, यह केवल जनजातियों की विशेषता नहीं है क्योंकि आज भी भारतीयों के बीच में के जीवन में जातीय पंचायतों का गहरा प्रभाव पाया जाता है।

जाति तथा जनजाति में अंतर

(1) जनजातियों की विशिष्ट धार्मिक विश्वास देवी देवता विधि संस्कार रहे हैं परंतु साथ ही यह हिंदू कर्मकांडों का अनुसरण और उनके देवी देवताओं को भी पूजती रही हैं। यह हिंदू पुरोहित की सेवाएं भी प्राप्त करती रही हैं। दूसरी और विभिन्न जातियों के लोग अपने ही धार्मिक विश्वासों को मानते रहे हैं। प्रत्येक जनजाति का अपना धर्म और देवी-देवता रहे हैं, जबकि जाति व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक जाति का अपना कोई पृथक धर्म और देवी-देवता नहीं पाए जाते हैं।

(2) जाति में अंतर्विवाह के नियम का पालन किया जाता है। प्राय: प्रत्येक व्यक्ति अपनी जाति में ही वैवाहिक संबंध स्थापित करता है। इसके विपरीत जनजातियों में अंतर्विवाह के नियम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता है।वह पूर्णतया अंतर्विवाही समूह नहीं होता है , परंतु आज विवाह की दृष्टि से जाति और जनजाति दोनों में समानता दिखाई पड़ती है। जहां लोग अपनी जनजाति के बाहर विवाह करने लगे हैं वहां जाति के बाहर भी वैवाहिक संबंध स्थापित होने लगे हैं।

(3) जाति किसी काल्पनिक पूर्वज से अपनी उत्पत्ति नहीं मानती हैं , जबकि जनजातीयां विभिन्न कल्पनाओं को भी अपनी उत्पति का आधार मानती हैं।

(4) एक जाति बहुत सी उपजातियों से मिलकर बनती है, परंतु एक जनजाति में उप जनजातीयां नहीं पाई जाती हैं। विभिन्न सामाजिक स्थिति के लोग अवश्य पाए जाते हैं।

(5) प्रत्येक जनजाति का अपना एक विशिष्ट राजनीतिक संगठन होता है, लेकिन जाति का इस प्रकार का कोई स्पष्ट राजनीतिक संगठन नहीं पाया जाता है। हां इतना अवश्य है कि नीची समझी जाने वाली जातियों की पंचायतें हैं, अपनी-अपनी जातियों के लिए राजनीतिक संगठन के रूप में कार्य करती है।

(6) जाति के लोगों का अधिकांशतः एक ही व्यवसाय होता है, जबकि एक ही जनजाति के लोग अलग-अलग व्यवसाय करते हैं। जनजाति में जाति की तुलना में आर्थिक स्वतंत्रता अधिक पाई जाती है। देश में अनेक ऐसी जनजातीयां भी देखी जाती हैं, जो एक ही व्यवसाय में लगी हुई है और विभिन्न आवश्यक वस्तुओं के लिए अन्य जनजातीयों पर निर्भर हैं। वर्तमान समय में जाति व्यवसाय का संबंध ढीला पड़ता जा रहा है और एक ही जाति के लोग विभिन्न व्यवसायों में लगे हैं।